# भारतीय युवा और राजनीति

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

युवाओं को राजनीति में आना चाहिए या नहीं, यह प्रश्न बहुत समय से लोगों के चिन्तन में रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि युवा पढ़–लिखकर देश के निर्माण में लगें तो ज्यादा अच्छा है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग यह चाहते हैं कि यदि युवा भारतीय राजनीति में आयेगा तो नये उत्साह के साथ वह देशहित के लिए कार्य करेगा। राजनीति में युवाओं का भाग लेना या न लेना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि वह किस सोच के साथ राष्ट्रहित के बारे में चिंतन करता है। यदि उसकी सोच सकारात्मक है तो वह राजनीति में भाग लेकर देश को आगे बढ़ा सकता है। किन्तु यदि उसकी सोच नकारात्मक है तो वह देश को पतन के गर्त में डाल सकता है। भारत युवाओं का देश है। यहां 35 वर्ष की उम्र वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक हैं। यदि सभी युवा सकारात्क दृष्टि से कार्य करें तो देश बहुत आगे जा सकता है।

आज भारतवर्ष में पैंतीस वर्ष की अवस्था के पैंसठ करोड़ युवा हैं। यह व्याख्यान युवाओं के लिए विशेष उपयोगी है। युवा अवस्था बचपन और प्रौढ़ावस्था के बीच की अवस्था है। इस अवस्था में तन, मन स्वस्थ होता है। शरीर में उत्साह होता है। किसी भी कार्य को करने का जज्बा रहता है। यदि युवा शक्ति का सही नियोजन किया जाये तो देश का विकास होता है। युवाओं को समाज और पूरे राष्ट्र के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। व्यक्ति वही याद किया जाता है जो समाज को कुछ देकर जाता है। गुलाब के फूल के सूख जाने के बाद भी उसमें सुगंध रहती है और वह अपने रहने का ज्ञान कराता रहता है। प्रश्न उठता है युवा शक्ति का नियोजन कैसे किया जाये? युवा स्वयं को नियोजित करें,  जिस क्षेत्र में उनकी रुचि हो उसी क्षेत्र को जीवन निर्माण के लिए उन्हें चुनना चाहिए।

जीवन का क्षेत्र कक्षा दस उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही स्पष्ट हो जाता है। युवाओं को जिस क्षेत्र में जाना होता है उस क्षेत्र को चुनकर लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिए। उन्हें राजनेता,

अभिनेता, चिकित्सक या प्रशासन के क्षेत्र में जाना है, इस लक्ष्य को निर्धारित करके उस पर चलना चाहिए और सफलता प्राप्त करनी चाहिए। जीवन निर्माण के अनेक मार्ग है। किसको किस मार्ग पर चलना है वह स्वयं निश्चित करें। यदि लक्ष्य स्पष्ट होता है तो मार्ग भी सही हो जाता है। द्रौपदी के स्वयंवर में अनेक धनुर्धर सम्मिलित हुये थे किन्तु सफलता केवल अर्जुन को प्राप्त हुई। अर्जुन से पूछा गया कि क्या देख रहे हो? अर्जुन ने उत्तर दिया कि इस समय केवल मुझे मछली की आंख ही दिखाई दे रही है। इस लक्ष्य के साथ अर्जुन ने सफलता प्राप्त की। इस सृष्टि में सकारात्मक शक्ति भरी पड़ी है उसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यदि बच्चा संस्कारित और अध्ययन में रुचि रखता हैं तो उसके संरक्षक का कर्त्तव्य है कि उसे संसाधन उपलब्ध करायें। बिना संसाधनों के माध्यम से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। युवाओं को भी संसाधन उपलब्ध कराया जाना चाहिए, जिससे उन्हें आगे बढ़ने में कोई परेशानी न हो।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक योजनाओं के द्वारा युवकों को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया है। मनुष्य में बुद्धि होती है वह विकास कर सकता है। समाज को युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि कोई युवा विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो जिसके पास धन है या कुछ ऐसी संस्थाएं जो चैरेटी करती हैं उन्हें ऐसे युवाओं को संसाधन उपलब्ध कराकर युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। संस्थाएं भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें। शिक्षक का भी कर्त्तव्य है कि वह विद्यार्थी को प्रोत्साहित करें। कभी–कभी युवा कुसंगति में पड़कर बुरा मार्ग चुन लेता है और अपनी जीवन दिशा बदल देता है। ऐसे युवाओं को सही मार्ग पर लाने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अतः प्रशिक्षण के द्वारा युवाओं को दिशा निर्देश देना चाहिए। जीवन में स्वस्थ्य प्रतियोगिता होनी चाहिए। किसी का नुकसान करके प्रतियोगिता नहीं करनी चाहिए। किसी भी औद्योगिक प्रतिष्ठान की उन्नति का मुख्य कारण यह है कि उस प्रतिष्ठान में कार्य करने वाले सभी लोग एक टीम भावना से कार्य करते हैं। उस प्रतिष्ठान का मैनेजर सबको साथ लेकर के चलता है और सबको कठिन परिश्रम करने की प्रेरणा देता है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो सफलता का कोई भी शार्टकट रास्ता नहीं है। खेल के क्षेत्र में देखा यह जाता है कि खिलाड़ी जीतने के लिए प्राण की बाजी लगा देते हैं और जो सफलता प्राप्त होती है उसे वह देश के लिए समर्पित कर देते हैं। किसी

भी क्षेत्र में काम करने वाला व्यक्ति जो सफलता प्राप्त करता है वह सफलता उसके परिवार के लिए है ही साथ ही समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान देने वाली होती है।

आजकल प्रायः यह देखा जाता है कि एक गरीब परिवार का युवा जब किसी उच्च पद पर पहुँच जाता है तो साक्षात्कार के समय वह अपने बीते दिनों की याद कर भावुक हो जाता है। उसके द्वारा दिया गया साक्षात्कार समाज के उन वर्गों के लिए प्रेरणास्रोत है, जिनके पास साधन नहीं है, किन्तु जीवन में कुछ कर गुजरने का जज्बा है। ऐसे परिवार के व्यक्ति न केवल अपना भाग्य बदलते हैं, बल्कि अपने आगे आने वाली पीढ़ी का भी बेहतर भविष्य निर्माण कर उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं।